www.prepp.in
Prepp
Your Personal Exams Guide

मैथिली / MAITHILI

पेपर II / Paper II

साहित्य / LITERATURE

निर्धारित समय : **तीन** घंटे Time Allowed : **Three** Hours	अधिकतम अंक : **250** Maximum Marks : **250**

प्रश्न-पत्र स्पष्ट निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबासँ पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशकेँ सावधानीपूर्वक पढ़ि लिअ :

*एतय **दू खण्ड (SECTION)** मे विभक्त कुल **आठ** प्रश्न अछि ।*

*अभ्यर्थी कुल **पाँच** प्रश्नक उत्तर देथि ।*

*प्रश्न संख्या **1** तथा प्रश्न संख्या **5** अनिवार्य अछि । शेष प्रश्नमेसँ कोनो **तीन** प्रश्नक उत्तर लिखू, जाहिमे प्रत्येक खण्ड **(SECTION)** सँ कमसँ कम **एक** प्रश्नक चयन आवश्यक अछि ।*

प्रश्न / खण्डक निर्धारित अंक ओकरा समक्ष निर्दिष्ट कयल गेल अछि ।

*उत्तर **मैथिली** (देवनागरी लिपि) मे लिखब अनिवार्य अछि ।*

जतय निर्दिष्ट हो, शब्द-सीमाक अनुपालन अपेक्षित अछि ।

उत्तरित प्रश्नक गणना क्रमानुसार कयल जायत । यदि काटल नहि गेल हो तँ अंशत: लिखित उत्तरक गणना सेहो कयल जायत । प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिकाक कोनो रिक्त पृष्ठ अथवा कोनो पृष्ठक रिक्त भागकेँ अवश्य काटि दी ।

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question / part is indicated against it.

*Answers must be written in **MAITHILI** (Devanagari script).*

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

www.prepp.in

Prepp
Your Personal Exams Guide

SECTION A

Q1. **प्रत्येक प्रश्न अनिवार्य अछि। काव्य-वैशिष्ट्यकेँ निर्दिष्ट करैत निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू, जाहिमे भाव स्पष्ट रहय। (उत्तर अधिकतम 150 शब्दमे दातव्य)** *10×5=50*

(a) "अगमने प्रेम गमने कुल जाएत,
चिन्ता पङ्क लागलि करिणी ।
मञे अबला दह दिस भमि झाखओ,
जनिब्याघ डरे भीरु हरिणी ।।
चन्दा दूरजन गमन विरोधक
उगल गगन भरि बैरि मोरा ।
कुहू भरमे पथ पद आरोपल,
आए तुलाएल पञ्चदशी ।।" *10*

(b) "काजर-तिमिर-भरमे जसु तन-रुचि,
निबसय-कुँज-कुटीर ।
गति अति कुटिल सुधीर ।।
सजनी, कान्ह से बरजु भुजङ्ग ।
से मोर हृदय-चदन-रुह लागल
भागल धरम-विहङ्ग ।।
लोचन-कोर पड़ैत नव नागरी रहए नपारए धीर ।
कुंचित अरुन अधर भरि पीबए
— कुलवति-बरत-समीर ।।" *10*

(c) "नाव अरि लाव नहि, उतरक दाव नहि,
एक बुद्धि आब नहि, सगर अपारमे ।
वीर अरि छोट नहि, सङ्ग एक गोट नहि,
लङ्का लघुकोट नहि, विदित संसारमे ।।
दबुज अबल नहि, पुरी गम्य थल नहि,
प्रदेश अमल नहि युद्धक विचार मे,
अहाँक समान नहि, वीर हनुमान नहि,
सर्व्वस्वक दान नहि — तुल उपकार मे ।।" *10*

www.prepp.in

(d) "परम मेधावी कते बालक जत,
मूर्ख रहि हा ! गायहा चरबैत छथि
कते वाचस्पति कते, उदयन जत,
हाय ! बन गोइठा बिछैत फिरैत छथि,
तानसेन कतेक रविवर्मा कते,
घास छीलथि वागमतीक कछेड़ मे,
कालिदास कतेक विद्यापति कते,
छथि हेड़ाएल महींसवारक हेड़मे ।
अन्न ने छै, कैंया ने छै कौड़ी ने छै,
गरीबक नेना कोना पढ़तैक रे ?
उठह कवि, तो दहक ललकारा कने
गिरि-शिखर पर पथिक-दल चढ़तैक रे ।।" 10

(e) "झमाझम बरसैत मूसलधार,
माघक ठार, चैतक तस:
सभ फूसि ओकरा हेतु ।
लगाबथु ग केओ कतेको जोर
बाप-पीतिकेँ करथु गऽ सोर,
मुदा रोइयाँ एकोटा ओकर
उपाड़ल नहि हेतन्हि ककेरा बुतेँ ।।" 10

Q2. (a) "मैथिली मे नव-परम्पराक प्रवर्त्तक महाकवि मनबोध 'कृष्णजन्म' मे सर्वत्र ठेठ शब्दक ठाठ बान्हि लोकोक्तिक सटीक प्रयोग कय भाव एवं भाषा दूनू के अत्यन्त हृदयग्राही ओ प्रभावपूर्ण बना देने छथि" — एहि कथनक समीक्षा करू । 20

(b) 'मिथिला-भाषा रामायण' मे सुन्दरकाण्डक नामकरण पर विचार करैत, कवीश्वर चन्दाझाक कल्पना-कौशल पर प्रकाश दिअ । 15

(c) वर्तमान प्रबुद्ध युग मे कोन प्रकारक कवि चाही ? एहि प्रश्नक उत्तर मे 'यात्री'जी द्वारा रचित 'चित्रा' कविता संग्रहक कविता सभक उल्लेख करैत विस्तार सँ विवेचना प्रस्तुत करू । 15

www.prepp.in

Prepp
Your Personal Exams Guide

Q3. (a) "लालदासक 'रमेश्वर चरित मिथिला रामायण'क बालकाण्ड मे मिथिलाक विलक्षण संस्कृतिक मार्मिक चित्रण भेल अछि" — एहि कथनक सविस्तार विवेचना करू । 20

(b) "समकालीन मैथिली कविताक प्रवृत्ति सामाजिक परिवर्तनक दिशामे महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह करैछ" तर्कसंगत उत्तर दिअ । 15

(c) 'कीचक वध' मे कवि वर्णनक प्रति विशेष मात्सर्य नहि देखा भावनात्मक क्रमबद्ध सुनियोजित एवं चारित्रिक विकास दिस बेसी उन्मुख भेल छथि — प्रतिपादित करू । 15

Q4. (a) "सरस जीवनक मधुर गायक महाकवि विद्यापति सौन्दर्योपासक कवि छलाह" — एहि कथनक युक्ति-युक्त विवेचना करू । 20

(b) समकालीन मैथिली कविताक विकास-यात्रा पर प्रकाश दिअ । 15

(c) 'दत्त-वती' काव्यक द्वितीय सर्ग मे वर्णित गुरुकुलक शिक्षण-व्यवस्था एवं आकर्षक वातावरण ओ विश्वशान्तिक राष्ट्रीय स्वरूपक चित्रण प्रस्तुत करू । 15

Prepp Your Personal Exam Guide

SECTION B

Q5. निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू, जाहिमे भाव स्पष्ट रहय । (उत्तर अधिकतम 150 शब्दमे दातव्य अछि) *10×5=50*

(a) "पूर्णिमाक चान्द अमृत पूरल मुह श्वेत पङ्कजाका दल भ्रमर वयिसल अइसन आँषि । काजरक कल्लोल अइसन भञुह । गथले फुले नर्म्मदाक शलाका पूजल अइसन षोम्पा । पखाक पल्लव अइसन अधर । कनिअराक कर अइसन नाक । सीन्दुर मोति लोटाएल अइसन दान्त, वेतक साट अइसन बाँह । परिजातक पल्लव अइसन हाथ ।" *10*

(b) "कोन काज हमरा बुतेँ हायत ? भीख माङ्गब ? भिखमंगोके तँ लोक झझकारिते छैं । मुदाई मौगी अहलादि कए भरि पेट आगरह कए-कए खुअबैए कते ने सिनेह करैए । बीस गोटे द्वारि घूमब, बीस गोटेक बार सुनब तँ होइत बीस टा पाई घुरि जाइ सेहे नीक, मुदा जँ मौगीं देखिलिए ई काँख महक मोटरी ?" *10*

(c) "सुकर्म आ अपकर्म ककरा कहै छै, से बुझबाक बुद्धि जँ अहाँ मे रहैत तँ आइ अहाँकें हमरासँ वा हमर ऐ स्टालसँ घृणा नै होइत । एके टोकारा पर अहाँ लगले हमरा लग दौड़ल अबितौं .... पुछितौं जे हमर व्यवसाय घाटा मे चलि रहल अधि की नफामे । अहाँ से कयलौं नै आतें केवल आश्रमक बा परिवारक, अपितु अहाँ अपनो लेल भारेटाछी ।" *10*

(d) "सैह काल तँ हमरा सभक काल भऽ गेला आइ मासान्त, काल्हि संक्रान्ति, परसू भदवा, एकटा टाट बान्हक हो तँ नौ दिन पतड़ा देखैत-बैसल रहूँ । औ संसारक और कोनो देश मे भदवा मानैत अछि ? भद्रामहरानी मे वास्तविक सामर्थ्य छैन्ह तँ ओकरा सभणें किएक नहि धरैत छथिन्ह ? पृथ्वी पर और-और लोकें दिक्‌शल किऐक नहि लगैत छैक ? यूरोप, अमेरिका बालाकें अघपहरो किऐक नहि धरैत छैक ? सबसँ बुड़िबक दीनानाथ हमरे लोकनि छी ?" *10*

(e) "सरिपहुँ ... बागमती, कमला, बलान, गण्डक आ कोसी खास कऽ कोसी तँ अपराजिता अछि, ने । ककरहु सामर्थ्य नहि जे एकरा पराजित कऽ सकय । सरकार आओत ... चलि जायत मिनिस्ट्री बनत आ टूटत, मुदा ई कोसी, ई बागमती, ई कमला आ बलान ... अपन एहि प्रलयंकारी गति मे गामक-गाम के भसि अबैत रहत ।" *10*

www.prepp.in

Prepp Your Personal Exams Guide

Q6. (a) “खट्टर ककाक विनोदपूर्ण विचार-लहरी, मिथिलाक संस्कृति ओ पुरातन सभ्यता पर मार्मिक व्यंग्यक प्रहार कयने अछि” — एहि कथनकेँ प्रमाणित करू । *20*

(b) ‘पृथ्वी पुत्र’ उपन्यास मे जीवनक ओ चित्र उतारल गेल अछि, जे सत्य पर आधारित अछि, — एहि युक्तिक समीक्षा करू । *15*

(c) ‘लोरिक विजय’ उपन्यासक कथानक मार्मिकता ओ अतिरंजकतासँ मिश्रित अछि — एहि कथनक खण्डन वा मण्डन करू । *15*

Q7. (a) ‘वर्णरत्नाकर’क द्वितीय कल्लोलमे वर्णित विषय-वस्तुक वर्णन करैत एहि पोथीक महत्त्वकेँ प्रतिपादित करू । *20*

(b) आधुनिक मैथिली कथा मे वर्त्तमान समाजक चित्र अंकित रहैत अछि; ‘कथा-संग्रह’ मे पठित कथाक आधार पर एहि कथनक समीक्षा करू । *15*

(c) ‘मधुरमनि’ कथा मे ‘किरण’जी श्रमजीवी वर्गक दाम्पत्य जीवनक अनुराग-विरागक हिलसगर कथा कहने छथि .... एहि कथनकेँ युक्तिसंगत सिद्ध करू । *15*

Q8. (a) मिथिलाक मध्यवर्गीय अभिजात्य वर्गक छद्म विद्रूपक चित्रण राजकमलक कथा मूल तत्त्व कहल जाइत अछि — एकर विवेचना करू । *20*

(b) ‘झगड़ा’ कथा शीर्षक संयोगाश्रित घटना प्रधान अछि, एकर उद्देश्य करुणा उत्पन्न करब थिक । एहि मे लेखककेँ कतेक सफलता भेटल छन्हि ? ऐकरा प्रमाणित करू । *15*

(c) ‘भफाइत चाहक जिनगी’क नाटककार शिक्षित-बेरोजगार युवकक माध्यमे समाजमे व्याप्त जीवनक समस्या एवं संघर्षक संग परिस्थितिक अनुसार अपनाकेँ अनुकूल बना सकए, तफर बुद्धिवादी सामंजस्य प्रस्तुत कएलनि अछि — एहि कथनक समीक्षा करू । *15*